DECLINE OF FEUDALISM

FOR U.G.PART-1,PAPER-2

सामंतवाद भू- वितरण पर आधारित एक सामाजिक- राजनीतिक व्यवस्था थी जिसका विकास यूरोप में आठवीं सदी से प्रारंभ होकर 13 वी सदी के अंत तक हुआ ।इसने रोमन साम्राज्य के पतन के बाद मध्यकालीन यूरोपीय समाज को सुरक्षा प्रदान की। सामंतवाद के विकास में कई सौ वर्ष लगे थे ।इसका पराभव भी कई शताब्दियों तक चला । 8वीं सदी में प्रारंभ होने वाली सामंती प्रथा तेरहवीं सदी तक अपनी उत्कर्ष की पराकाष्ठा तक जा पहुंची। प्रशासन की विधा के रूप में इसका ह्रास 13 वीं सदी से शुरू हुआ यद्यपि एक सामाजिक व्यवस्था के रूप में यह काफी दिनों तक बना रहा। इस प्रथा के अवशेष यूरोप में 18वीं शताब्दी के अंत तक विद्यमान रहे परंतु 15 वीं शताब्दी तक यह प्रथा काफी निर्बल हो गई और जल्द ही सारे यूरोप में सामंती व्यवस्था की समाप्ति हो गयी।

सामंतवाद के पतन के कारणों की ओर जब हम दृष्टिपात करते हैं तब यह पाते हैं कि अपने मूलभूत दुर्गुणों के कारण ही यह पतन की ओर अग्रसर हुआ था। **हेनरी मार्टिन** ने ठीक ही लिखा था कि **सामंतवाद नें अपने आस्तीन में ऐसा हथियार छुपा रखा है जो एक दिन इसी पर वार करेगा।** इस के पतन में आंतरिक एवं बाहय दोनों प्रकार के कारण जिम्मेदार थे। 13 वीं शताब्दी में कुछ नवीन परिस्थितियां उठ खड़ी हुई जिसके सामने सामंतवाद टिक न सका।

सामंतवाद का **राजाओं एंव सामान्य जनता दोनों ने विरोध** किया। ऊपर से राजकीय दबाव और नीचे से जन-सामान्य के विरोध के कारण इसका पतन निश्चित हो गया।

राजाओं ने इसलिए विरोध किया कि वह सामंतों की शक्ति को नष्ट करके ही अपनी स्थिति मजबूत कर सकते थे। 15 वीं शताब्दी में राजाओं की शक्ति मजबूत होने लगी क्योंकि वह अपनी राष्ट्रीय सेना तैयार कर चुके थे ।इसकी सहायता से वे सामंतों को नियंत्रण में रख सकते थे ।राज्य करों एवं सैन्य शक्ति में वृद्धि के कारण राजाओं की स्थिति मजबूत हो गई। राष्ट्रीय सरकार की स्थापना के साथ राष्ट्रीय भावना का उदय हुआ जिसके फलस्वरूप सामंती प्रथा का विनाश अनिवार्य हो गया। सब लोग सुव्यवस्थित शासन प्रणाली तथा पारस्परिक शांति की कामना करने लगे एंव सामंती प्रथा को घृणा की दृष्टि से देखने लगे।

कृषक विद्रोह -सामान्य जनता ने सामंती उत्पीड़न से क्षुब्ध होकर सामंती प्रथा का विरोध किया। सामंती व्यवस्था के शिकार विशेषतया किसान हुए। सामंतों के अत्याचार से शोषित किसानों के हृदय में इस प्रथा तथा इसके समर्थकों के विरुद्ध विद्रोह की भावना बढ़ती जा रही थी। 14वीं शताब्दी के प्रारंभ में बहुत से कृषक अपनी स्थिति में रहने को तैयार नहीं थे। 1348 ई. में एक भीषण महामारी जिसे '**काली मौत**' कहा जाता है ,यूरोप की लगभग आधी जनसंख्या का सफाया कर दिया। किसानों की संख्या कम हो जाने के कारण

जमीन जोतने वाले मजदूरों की कमी हो गई । दूसरी ओर शहरों में व्यापार की उन्नति और काली मौत के कारण मजदूरों की मृत्यु से मजदूरी बढ़ गई थी। परंतु सामंतों ने स्वार्थ वर्ष मजदूर कानून द्वारा मजदूरी को सीमित करने का प्रयास किया ।किसानों एवं मजदूर इस बात को लेकर काफी नाराज हो गए। इंग्लैंड के हजारों किसानों ने **1381 ई** . '**वाट टाइलर**' के नेतृत्व में विद्रोह किया। कमियौटी प्रथा, अधिक लगान तथा मजदूर कानून के खात्मे की मांग उन्होंने की । यधपि यह विद्रोह को दबा दिया गया लेकिन भावना जीवित रहीं। फ्रांस में भी **1358 ईस्वी** में प्रसिद्ध '**जैकरी विद्रोह**' हुआ । शहरों के उदय के कारण किसानों का सामंतों पर निर्भर रहना आवश्यक न रह गया क्योंकि वह शहरों में रोजी-रोटी कमा सकते थे। इस तरह कृषक विद्रोह ने सामंतवाद की नींव हिला दी।

सामंतों के आपसी संघर्ष- सामंत प्रथा की सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि सामंत अपना प्रभुत्व कायम करने हेतु निरंतर आपस में लड़ते रहते थे। इससे उनकी शक्ति तो धीरे-धीरे कम हुई ही थी साथ ही उनकी लोकप्रियता भी जाती रही। सामंती युद्ध के कारण जनता को बड़ी कठिनाई होती थी ।सैनिक फसल को बर्बाद कर देते थे और जान- माल की काफी हानि होती थी। लंबे तथा दीर्घकालिक युद्धों यथा इंग्लैंड और फ्रांस के बीच **शत वर्षीय युद्ध** तथा इंग्लैंड के **गुलाबों के युद्ध**(15वीं सदी) ने जहां एक और धन- जन का नुकसान पहुंचाया वहीं दूसरी और सामंती व्यवस्था के प्रति घृणा की भावना का संचार किया । निरंतर युद्ध के कारण सामंतों की आर्थिक हालत भी खराब हो गई। ऐसी अवस्था में उनकी शक्ति इतनी कम हो गई कि वे राजाओं की बढ़ी शक्ति का सामना करने में बिल्कुल असमर्थ हो गये।अंत में राजाओं ने उनकी रही सही शक्ति का भी अंत कर दिया।

धर्म युद्ध- सामंतवाद के पतन का एक अन्य महत्वपूर्ण कारण धर्म युद्ध(200 वर्ष तक)था। मध्यकाल में जेरूसलम,नजारेथ आदि धर्म स्थलों को लेकर मुसलमानों तथा ईसाइयों के बीच रक्त रंजित संघर्ष हुए। इन्हें हम धर्म युद्ध के नाम से जानते हैं ।इन युद्धों में धार्मिक भावनाओं से प्रेरित होकर तथा पोप के आदेश पर बड़ी संख्या में सामंतों ने भाग लिया। धर्म युद्ध में भाग लेने वाले बहुत से सामंतों ने या तो अपनी जमीन बेच दी थी या उसे गिरवी रख दिया था। इस तरह सामंती शक्ति तथा प्रभाव राजाओं तथा व्यापारियों के हाथ में चले गए । अनेक सामंत इस युद्ध में मारे गए और उनकी भूमि राजाओं द्वारा जब्त कर ली गयी।

व्यापार- वाणिज्य की प्रगति- सामंती प्रथा के अंतर्गत जागीरों की स्वायत्तता ने व्यापार- वाणिज्य की वृद्धि को रोक रखा था। धर्म युद्ध ने व्यापारिक प्रगति को बढ़ावा दिया। पश्चिम पूरब के विलासी सभ्यता से परिचित हुए तथा यूरोपीयों ने मुसलमानों के हाथों से भूमध्यसागर का रास्ता छीन लिया। इससे भूमध्य सागर वाणिज्य- व्यापार का केंद्र बन गया। इटली तथा गॉल के कई नगर पुनर्जीवित हो उठे। 15वीं सदी तक पेरिस, वेनिश,प्राग,ब्रुसेल्स,लंदन आदि की जनसंख्या तेजी से बढ़ी । शहरों के विकास ने रूढ़िवादिता पर प्रहार किया। फल स्वरुप सामंती प्रथा की संकीर्णता धीरे-धीरे जाती रही।

मुद्रा-अर्थव्यवस्था का उदय- व्यापार- वाणिज्य ने मुद्रा अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित किया तथा मुद्रा अर्थव्यवस्था ने व्यापार वाणिज्य को। अब भोग विलास की वस्तु की भरमार हुई तथा सिर्फ लगान के रूप में अनाज पाकर सामंत वर्ग संतुष्ट नहीं हो सकते थे। वे अब किसानों से सेवाओं के लिए पैसों की मांग करने लगे। इससे उनके राजनीतिक अधिकार को धक्का लगा ।किसानों पर उनका प्रत्यक्ष व्यक्तिगत प्रभुत्व जाता रहा।

सामंत मुद्रा में सेवाएं खरीदने में अक्षम थे। सामंतों ने कृषि को मुनाफा पाने के लिए इस्तेमाल करना शुरू किया। घेराबंदी एंव बड़े प्लॉट के माध्यम से कृषि विकास पर उन्होंने जोर दिया। जागीर (Manor)में बसे किसानों को निकाला जाने लगा ।यह मेनोरियल व्यवस्था का खात्मा होने के साथ-साथ कृषि के व्यवसायीकरण भी करने में सहायक रहा। मैनर व्यवस्था से मुक्त किसानों का पलायन शहरों की ओर होने लगा ।इस प्रकार मुद्रा प्रधान अर्थव्यवस्था के कारण देहात एवं शहरों में एक नई लहर पैदा हुई जो सामंतवाद के विरुद्ध थी।

मुनाफा अर्थव्यवस्था का उदय- वाणिज्य- व्यवसाय की प्रगति के कारण एक प्रतियोगी और मुनाफा प्रधान अर्थव्यवस्था का उदय हुआ ।लाभ प्राप्ति की आकांक्षा बढ़ी जिससे पूंजीवाद के उदय का मार्ग प्रशस्त हुआ। अब अर्थव्यवस्था जीवन निर्वाह अर्थव्यवस्था नहीं रही। गतिहीन कृषि प्रधान एवं सामूहिक सामंती अर्थव्यवस्थाओं का स्थान एक गतिशील, शहरी ,प्रतियोगी एंव मुनाफा प्रधान अर्थव्यवस्था ने ले लिया ।उदयीमान आर्थिक शक्तियों के नियमन के लिए एक केंद्रीय सरकार की आवश्यकता महसूस की जाने लगी जिसने राष्ट्रीय राज्यों के उदय का मार्ग प्रशस्त किया।

राजा -व्यापारी सहयोग- अर्थव्यवस्था में आए बुनियादी बदलाव ने सामाजिक संरचना को प्रभावित किया ।किसान, व्यापारी ,मजदूर, उद्योगपति आदि वर्ग उभरे ।नई व्यवस्था में सभी के हितों का पोषक राजा ही हो सकता था। व्यापारियों ने राजा को सहायता दी। व्यापारिक बाधाएं दूर करने, आवागमन को दुरुस्त करने तथा चुंगी करों में कमी लाने जैसी आवश्यकताओं की पूर्ति राजा ही कर सकता था। व्यापारी थर्ड स्टेट कहे जाते थे। राजा-व्यापारी सहयोग सामंतवाद के पतन के लिए उत्तरदायी बना।

नवीन हथियारों का आविष्कार- नवीन हथियारों के अविष्कार होने के फलस्वरूप सामंतों का सामरिक महत्व घटा ।घुड़सवार सामंत परंपरागत भाले, बर्छेऔर तलवारों से लड़ते थे जबकि लंबे धनुष का प्रचलन होने से तीरंदाज किसान भी घुड़सवार सामंतों का मुकाबला करने लगा। मंगोलों द्वारा यूरोप में गोला बारूद से परिचित कराए जाने के कारण सामंती किलों की दुर्भेदता जाती रही। बंदूकों के प्रयोग के कारण पैदल सेना का प्रभाव बढ़ा।गोला बारूद तथा बंदूकें सामंत वर्ग नहीं खरीद सकते थे क्योंकि व्यापारी वर्ग इन का विरोधी था। व्यापारियों ने राजा का हाथ मजबूत किया। परिणाम स्वरूप इन नए साधनों पर राजा का

एकाधिकार हो गया अतः युद्धों में सामंतों का महत्व घटा। पुनः इस कारण से सामंतों को नियंत्रित करने में भी राजा को सफलता मिली।

छापेखाने का आविष्कार- धर्म युद्ध के क्रम में अरबों के साथ संपर्क के कारण यूरोप में छापे खाने का प्रयोग शुरू हुआ। इस प्रकार बड़ी संख्या में सस्ती पुस्तकें सुलभ हो गई । परिणाम स्वरुप यूरोप में नए विचारों का तेजी से प्रचार हुआ और अंधविश्वासों में कमी आई । इस नई चेतना ने लोगों की आंखें खोल दी और लोग सामंतवाद की बुराइयों से परिचित हो गए। लोग जल्द से जल्द इस व्यवस्था से मुक्ति प्राप्त करने के लिए लालायित हो उठे।

चर्च का सहयोग- सामंतवाद को नष्ट करने में चर्च ने भी सहायता दी ।पोप ने अपने सामंत भूमिपतियों से कहा कि पश्चिम में अन्य ईसाई सरदारों से लड़ना बंद करें और पूर्व में मुसलमानों से लड़ने के लिए धर्म युद्ध पर जाये ।हजारों कृषक दास इन धर्म युद्धों में लड़ने के लिए गए क्योंकि पोप ने उन्हें वचन दिया था कि उन्हें स्वतंत्र कर दिया जाएगा।सामंतों को पोप द्वारा अपनी प्रजा पर अत्याचार न करने की भी सलाह दी गई ।चर्च के द्वारा एक आदेश निकाला गया जिसे **ईश्वर की शांति** कहा जाता था। इस आदेश के अनुसार बुधवार की शाम से लेकर सोमवार की सुबह तक तथा वर्ष के कुछ महीनों में युद्ध नहीं हो सकते थे ।चर्च तथा पोप के इन कार्यो ने प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से सामंतों की शक्ति को सीमित किया।

मध्यवर्ग का उत्कर्ष- शिक्षा की प्रगति, छापेखाने का आविष्कार ,वाणिज्य- व्यवसाय की उन्नति तथा शहरों की स्थापना के कारण यूरोप के विभिन्न देशों में एक प्रभावशाली मध्यम वर्ग का उदय हुआ ।शहरों में रहने वाले लोग स्वतंत्र विचारों के पोषक होते थे ।जागृत मध्य वर्ग के लोग सामंतों की अधीनता को मानने के लिए तैयार नहीं थे। ये लोग शांति चाहते थे ताकि उद्योग- धंधों तथा व्यापार का विकास हो सके।दूसरी ओर सामंत युद्ध प्रिय थे। अतः मध्यम वर्ग के लोग जल्द से जल्द सामंतों के चंगुल से मुक्ती पाना चाहते थे। यही कारण था कि राजा और मध्यम वर्ग ने मिलकर कालांतर में सामंतों की शक्ति का दमन किया।

पुनर्जागरण एवं धर्म- सुधार आंदोलन- पुनर्जागरण एवं धर्म- सुधार आंदोलन ने सामंतवाद के आधार स्तंभ को हिला दिया। पुनर्जागरण ने मानवतावाद एवं राष्ट्रीय राज्यों के उदय का मार्ग प्रशस्त किया ।इसके साथ ही तर्क एंव विवेक पर आधारित एक ऐसी विचारधारा का जन्म हुआ जो सामंती विचारधारा से मेल नहीं खाती थी ।धर्म सुधार आंदोलन ने चर्च की महत्ता पर कुठाराघात किया जो सामंती व्यवस्था का एक मुख्य आधार था।

इस प्रकार सामंतवाद का पतन उस सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक ,धार्मिक एवं बौद्धिक वातावरण का परिणाम था जिसका विकास 14वीं- 15वीं सदी में तेजी से यूरोप में हुआ था।इसमें सामंतवाद की आंतरिक कमजोरियां सहायक तो थी ही कुछ नवीन आधुनिक शक्तियों के झोंकों ने भी अपना योगदान दिया।

BY:ARUN KUMAR RAI
ASST.PROFESSOR
P.G.DEPT.OFHISTORY
MAHARAJA COLLEGE
ARA.

Last modified: 12:19